National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(66): 201-204
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. हेमन्त कुमार
सहायक प्राध्यापक (अतिथि),
मानवविज्ञान विभाग,
शासकीय जे. यो. छत्तीसगढ़ कॉलेज,
रायपुर (छ.ग.)

Correspondence:
डॉ. हेमन्त कुमार
सहायक प्राध्यापक (अतिथि),
मानवविज्ञान विभाग,
शासकीय जे. यो. छत्तीसगढ़ कॉलेज,
रायपुर (छ.ग.)

छत्तीसगढ़ की बैगा जनजाति के संदर्भ में संचालित सरकारी योजनाओं का अध्ययन

(कबीरधाम जिले के बोडला विकासखंड के विशेष संदर्भ में)

डॉ. हेमन्त कुमार

सारांश - केंद्र तथा राज्य शासन विगत पांच दशकों से भी अधिक अवधि से जनजातीय विकास हेतु प्रयासरत है। जनजातीय विकास एवं जनजातियों को राष्ट्र की मुख्य धारा में सम्मिलित करने हेतु शासन द्वारा संस्कृति संरक्षण सह-विकास की नीति को अंगीकृति किया गया है। जनजातीय विकास हेतु पांचवी पंचवर्षीय योजना से आज तक जनजातीय उपयोजना के माध्यम से आज जनजातीय शिक्षा, आर्थिक विकास, स्वास्थ्य एवं क्षेत्रीय विकास से सम्बंधित गहन कार्यक्रम चलाये जा रहे है। इन योजनाओं का सत्यापन हेतु कबीरधाम जिले के बोडला विकासखंड के अन्तर्गत निवासरत मोतिनपुर, करमंदा एवं गर्रा गांव के 100 परिवार का चयन उददेश्यमूलक निर्दशन पद्धति से किया गया है। तथा अध्ययन से पाया गया कि विशेष पिछड़ी बैगा जनजाति वर्तमान समय में भी विकास रूपी पहिया अभी भी इनके द्वार तक नहीं के समान पहुँचा है अर्थात इनकी स्थिति अभी भी बहुत पिछड़ी हुई स्थिति में हैं।

कुंजीशब्द- बैगा विशेष पिछड़ी जनजाति, योजना, छत्तीसगढ़, विकास।

परिचय- अपने विशिष्ट संस्कृति लक्षणों तथा निवास क्षेत्र के कारण विख्यात बैगा विशेष पिछड़ी जनजाति राष्ट्र के 75 तथा राज्य के पांच चिन्हित आदिम जनजातीय समुदाय में से एक है। वर्तमान समय में सात आदिम जनजातीय बैगा, बिरहोर, कमार, अबूझमाड़िया, पहाड़ी कोरवा, भुजिया, गिने जाते हैं। (http://cgtrti.gov.in/PVTG.html)[1] बैगा जनजातीय में संचालित योजनाओं का मुल्यांकन पर आधारित यह विषय चुना गया है। बैगा छत्तीसगढ़ की एक विशेष पिछड़ी जनजाति है। छत्तीसगढ़ में इनकी जनसंख्या 89744 (जनगणना (2011)[2] मे आंकी गयी थी, जो की कुल जनजातीय जनसंख्या के 1.147% व साक्षरता दर 32.17% है, जिनमे से पुरुष 40.01% तथा महिलाये 24.34% साक्षरता दर आँकी है। राज्य में बैगा जनजातीय समूह मुख्य रूप बिलासपुर, कवर्धा, कोरिया और राजनांदगांव जिले में निवासरत हैं। विकास एक जटिल एवं निरंतर चलने वाली बहु-आयामी प्रक्रिया हैं। इसे न तो किसी एक-दृष्टिकोण में बांधा जा सकता हैं और न ही किसी एक-दृष्टिकोण से व्याख्या की जा सकती हैं। विकास को परिभाषित करना एक टेड़ी खीर हैं अलग-अलग विद्वानो में इसे अलग-अलग प्रकार से परिभाषित किया जाता हैं। प्राय: पाठ्य पुस्तकों में विकास की परिभाषा नहीं दी जाती हैं। सीधे शब्दों में विकास का अर्थ हैं 'प्रगामी' दिशा की ओर परिवर्तन । परन्तु 'प्रगामी' शब्द सामाजिक मूल्यों पर निर्भर करता है। इसलिए वांछित दिशा में परिवर्तन कहना अधिक उपयोगी होगा। यदि हम अपने विकास की बात करें तो इस परिभाषा से संभवतः किसी को भी आपत्ति नहीं होगी। जहाँ तक

जनजातियों के विकास का मुद्दा हैं तो प्रश्न उठता है कि किसकी इच्छा से योजनाए, योजना बनाने वालों की इच्छा से या लागू करने वालो की इच्छा से या फिर जनजातियों की इच्छा से? यह एक अहम् प्रश्न हैं क्योंकि प्रायः जनजाति विकास के नाम पर दूसरों ने अपनी इच्छायें जनजातियों पर थोपने की धृष्टता की हैं।

आदिवासी विकास का मुख्य मुद्दा जीवन की गुणवत्ता से जुड़ा है। आदिवासी जनजीवन में गुणात्मक परिवर्तन लाना तथा आदिवासी जो अभावों से वे जूझ रहे हैं, उन अभावों को दूर करना, आदिवासी समाज और गैर-आदिवासी समाज के बीच जो खाई है उसे पाटकर समाज को मुख्यधारा के समकक्ष लाना ही आदिवासी विकास है। दुसरे शब्दों में कहें तो आदिवासी समाज की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थितियों में परिवर्तन लाना, उनमें निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना, प्रति व्यक्ति आय को बढाना, शिक्षा के स्तर को उन्नत करना, उनमे निहित अन्धविश्वासों एवं सामाजिक कुरीतियों को ख़त्म करना, तथा क्षेत्र में अधोसंरचनात्मक विकास करना एवं आदिवासी समुदाय की विशिष्ट पहचान को बनाये रखना ही आदिवासी विकास हैं। इन आर्थिक विकास कार्यक्रमों के मूल्यांकन से ज्ञात उपलब्धियों व कमियों का विश्लेषण कर बैगा जनजाति के सुनिश्चित व सतत आर्थिक विकास हेतु लघु कार्य के रूप में चुना गया हैं। इस संदर्भ में पूर्व में किये गये कायों में प्रमुख रूप से महंती (2002)[3] ने अपनी पुस्तक ग्रन्थ *"डेवलपमेंट ऑफ प्रिमिटिव ट्रायबल ग्रुप्स इन इंडिया"* में जनजातियों के समूह जो प्रमुख रूप से आदिम जनजातीय समूहों के विकास पर प्रकाश डाला हैं। इसमें इन्होंने टोटो, लोधा व चेंचू आदिम समूहों का नृजातीय वर्णन प्रस्तुत किया हैं। तथा जनजातीय विकास के अनेक पक्षों का अध्ययन कर लिखा कि विकास कार्यक्रम न्यूनतम अधिकतम रूप से अर्थात कम रूप से परिवर्तन ला रहे हैं। इन आदिम जनजातियों के विकास के लिए सरकार व स्वेच्छिक संगठन मिल कर कार्य करना चाहिए पी. के. महंती ने बताने का प्रयास किया है। तथा उपाध्याय, गया पांडेय (2002)[4] ने अपनी पुस्तक *"जनजातीय विकास"* में बताया कि किस प्रकार से जनजातियों की जनसंख्या के आधार पर नीति का निर्धारण किया जाए व भारतीय संस्कृति को बचाकर रखे अर्थात जल – जंगल और जमींन को सुरक्षित रखने के साथ ही साथ जनजातियो की विकास में बाधा उनके निवास स्थान जमीन/भूमि को माना हैं अर्थात स्थान विशेष के आधार पर योजनाएँ बनाकर क्रियान्वयन करने की बात कही है।

वैद्य (2003)[5] ने अपनी पुस्तक *"जनजातीय विकास मिथक एवं यथार्थ"* में विकास की अवधारणा, जनजातीयों का सरकारी विवरण योजनाएं एवं विकास के मूल्यांकन के लिए आठवी व नौवी पंचवर्षीय योजना जनजातीय विकास के वर्किंग ग्रुप, कल्याण मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट (1991-92) तथा अनुसूचित जनजाति आयुक्त की 29वीं रिपोर्ट के अध्ययन को आधार बताया व जनजातियों की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक व राज्यवार जनजातियों की जनसंख्या को बताते हुए सरकारी कमियों को बताया कि किस प्रकार विकास के लिए कहा तक कार्य कर रहे हैं और कितने सफल रहे हैं।

चौरसिया महोदय ने अपनी पुस्तक *"प्रकृति पुत्र बैगा"* के प्रथम संस्करण(2004)[6] में बैगा जनजाति की जनसंख्या, गांवो व स्त्री, पुरूष की संख्या, रहन-सहन का वर्णन किया है तथा (2009) की संस्करण में बैगा जनजाति के पास जो विशिष्ट लोक कथाओं, किवदंतियों एवं मिथको जो विपुल भण्डार है वह धीरे-धीरे सभ्य समाज के दखल से विलुप्त के कगार में है। उसे बचाने व लोगों तक इसे पहुचाने के लिए इस प्रकृति पुत्र बैगा के आधार पर जनजातीय जीवन दर्शन को बताया है कि आज भी वह किस प्रकार विकास के श्रेणी से दूर हैं। बैगा आदिवासियों के बारे में सबसे पहले सन 1867 में कैप्टन थामसन ने लिखा था कि बैगा बहुत घने जंगलों में रहने वाले लोग हैं। थामसन ने इन सहज रूप से अगम्य वनों में रहने वाले लोगों को *'जंगली जनजाति'* के नाम से पुकारा । तथा 1868 से 1885 तक बालाघाट बिलासपुर जोंन के डिप्टी कलेक्टर कर्नल ब्लोम फीड ने भी बैगा जनजाति पर लेखन कार्य किया और उसके कुछ दिनों बाद अपना रिपोर्ट तैयार कर ब्रिटेन की ईसाई मिशनरी को भेजा । सन 1931 में रसेल महोदय ने भी करीब 24 पेजों पर बैगा जनजाति के इतिहास पर चित्रण किया । इसके पश्चात सन 1932 में वैरियल एल्विन[7] ने अपने मित्र श्याम राव हिवाले के साथ बैगा चक के ग्राम पाटन एवं सडवा छापर में रहकर करीब 6 वर्षों तक इन जनजाति पर कार्य किया और 'द बैगा' नामक पुस्तक लिखी । यह बैगाओं पर पहली पुस्तक थी जो बैगा जनजाति के सम्पूर्ण जीवन को समाहित करती हैं जिसमें बारीक़ से बारीक पक्षों को वैरियल एल्विन ने इस पुस्तक में वर्णन किया हैं।

तालिका क्रं. 01 चयनित 100 बैगा जनजातीय परिवार के कुल जनसंख्या

क्र.	ग्राम पंचायत	ग्राम का नाम	पु.	म.	कुल	आयु-वर्ग							कुल
						0-10	11-21	22-32	33-43	44-54	55-65	65-75	
1	पंडरिया	मोतिनपुर	43	40	83	20	17	13	16	05	09	03	83
2	बोदा47	करमंदा	117	92	209	39	41	47	32	23	18	09	209
3	बोदा47	गर्रा	63	65	128	19	26	38	17	16	07	05	128
कुल स्रोत			223	197	420	78	84	98	65	44	34	17	420

उपरोक्त तालिका क्रं. 01 में अध्ययनित तीनों ग्राम (मोतिनपुर, करमंदा और गर्रा) की कुल जनसंख्या 420 पाये गये है,जिसमें पुरुषों की कुल संख्या 223 एवं महिलाओं की कुल संख्या 197 है। जिनमें अधिकतम 209 बैगा परिवार करमंदा ग्राम में पाए गए है तथा न्यूनतम 83 बैगा परिवार मोतिनपुर ग्राम में पाए गए।

तालिका क्रं. 02 चयनित 100 उत्तरदाताओं के परिवार की शैक्षणिक स्थिति

ग्राम	शैक्षणिक स्थिति												कुल	
	निरक्षर		साक्षर		प्राथमिक		माध्यमिक		मैट्रिक		मैट्रिकोत्तर			
	संख्या (%)		संख्या (%)		संख्या (%)		संख्या (%)		संख्या (%)		संख्या (%)		संख्या (%)	
	पु.	म.	पु.	म.	पु.	म.	पु.	म.	पु.	म.	पु.	म.	पु.	म.
मोतिनपुर	27	12	7	5	23	15	6	2	1	0	0	0	64	34
करमंदा	41	28	21	16	39	25	9	6	2	1	2	1	114	77
गर्रा	26	22	10	13	22	25	7	3	2	0	1	0	68	63
कुल	**94**	**62**	**38**	**34**	**84**	**65**	**22**	**11**	**5**	**1**	**3**	**1**	**246**	**174**

उपरोक्त तालिका क्रं**.** 02 से से स्पष्ट है कि सर्वाधिक निरक्षर 156 एवं न्यूनतम मैट्रिकोत्तर 4 पाए गए।

तालिका क्रं. 03 सूचनादाता के घर के प्रकार एवं कमरों की संख्या

क्रमांक	घर के प्रकार	आवृत्ति	प्रतिशत	कमरों की संख्या	आवृत्ति	प्रतिशत
1	झोपड़ी	8	8	एक	27	27
2	कच्चा	39	39	दो	65	65
3	अर्धपक्का	53	53	तीन	8	8
कुल स्रोत		100	100.00	कुल योग	100	100.00

उपरोक्त तालिका क्रं. 03 से स्पष्ट है कि सर्वाधिक अर्धपक्का मकान 53% एवं न्यूनतम झोपड़ी 8% तथा इनके घरों में कमरों की संख्या में सर्वाधिक दो कमरे वाले 65% एवं न्यूनतम तीन कमरे वाले 8% पाए गए।

विकास की परिभाषा:- (1) जिन्सबर्ग के अनुसार:- 'विकास परिवर्तन की एक प्रक्रिया है, जो किसी वस्तु में नवीनता पैदा करती है और संक्रमण को निरंतरता में व्यक्त करती है।[8]'

(2) मैकाइवर एवं पेज के अनुसार:- 'विकास परिवर्तन की एक दिशा है, जिसमें बदलने वाले पदार्थो की विभिन्न दशाएँ प्रगट होती है व जिसमें पदार्थो की यथार्थता का ज्ञान होता है।[9]'

ग्रामीण विकास:- ग्रामीण विकास ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों जीवन स्तर प्रतिमानों में बदलाव लाने वाली विस्तृत प्रघटना है, जिसका विस्तृत आधार एवं क्षेत्र है। ग्रामीण विकास को विभिन्न दृष्ट्रिकोण से विभिन्न विद्धानों द्वारा परिभाषा दी है जिसमें से कुछ परिभाषा निम्न है-

(1) वर्ड बैक के अनुसार (1992-75):- 'ग्रामीण विकास ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले भूमिहीन एवं मजदूर वर्ग की आर्थिक एवं सामाजिक जीवन को ऊंचा उठाने के कार्य में लाने वाली एक व्यूह रचना है।[10]'

(2)भार्गव बी. एस. एवं सामल के अनुसार (1999):- 'आपके अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में कर्मचारियों, प्रतिनिधियों एवं ग्रामीण जनता के द्वारा ग्रामों का विकास संभव है, जब तक इन्हे पर्याप्त अधिकार एवं उतरदायित्व नही सौपे जाते तब तक ग्रामीण क्षेत्रों का विकास संभव नही है।[11]'

तालिका क्रं. 04 चयनित उत्तरदाताओं के परिवार की व्यवसाय

क्रमांक	व्यवसाय	आवृत्ति	प्रतिशत
1	कृषि	41	11.98
2	मजदूरी	57	16.66
3	कृषि/मजदूरी	202	59.07
4	अन्य कार्य	42	12.28
कुल स्रोत		**342**	**100.00**

उपरोक्त तालिका क्रं. 04 से स्पष्ट है कि सर्वाधिक कृषि/मजदूरी 59.07% एवं न्यूनतम कृषि 11.98% पाए गए। अध्ययनित क्षेत्र में रहने वाले बैगा जनजाति के लोगों की जीवन बहुत सामान्य है। ये अधिकांश रूप से प्राथमिकता अपने भोजन को ही देते हैं जिनके लिए ये कृषि, मजदूरी वनोपज एवं शिकार का कार्य करते है ताकि स्वयं और परिवार की जीवन निर्वाह सुचारु रूप से चल सके।

तालिका क्रं. 05 चयनित उत्तरदाताओं के परिवार की वार्षिक आय

क्रमांक	वार्षिक आय (हजार में)	आवृत्ति	प्रतिशत
1	10000 से कम	13	13
2	10000 – 15000	34	34
3	16000 – 21000	38	38
4	21000 से अधिक	15	15
कुल स्रोत		**100**	**100.00**

उपरोक्त तालिका क्रं. 05 से स्पष्ट है कि सर्वाधिक वार्षिक आय 16-21 हजार में 38% एवं न्यूनतम 10000 से कम में 13% पाए गए।

तालिका क्रं. 06 आर्थिक विकास हेतु योजना लागू तथा लाभावित सूचनादाता की आवृत्ति

क्र.	योजनाएँ	आपके ग्राम में आर्थिक विकास हेतु कोई योजना लागू की गई है				कुल स्रोत	
		हाँ		नही			
		आवृत्ति	प्रति.	आवृत्ति	प्रति.	आवृत्ति	प्रति.
1	रोजगार गांरटी	91	91	9	9	100	100
2	अन्त्योदय योजना	100	100	0	0	100	100
3	वृद्धा पेंशन योजना	9	9	91	91	100	100
4	विधवा पेंशन	11	11	89	89	100	100

उपरोक्त तालिका क्रं. 05 से स्पष्ट है कि चयनित कुल सूचनादाताओं में से लगभग 91% व्यक्ति रोजगार गांरटी योजना के प्रति, 100% व्यक्ति अंत्योदय योजना के प्रति एवं 9% व्यक्ति वृद्धावस्था, 11% विधवा पेंशन योजना के प्रति जागरूक है। इन ज्ञात तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि अन्त्योदय योजना की जानकारी अध्ययन समूह के लगभग सभी व्यक्तियों को है अर्थात यह योजना इस समुदाय पर सफल सिद्ध हुई है।

अध्ययन का महत्व:- अनुसंधान चाहे जिस क्षेत्र में भी किया जाए उनका एक निश्चित उददेश्य एवं महत्व होता है। उस उददेश्य एवं महत्व के आधार पर अनुसंधान का औचित्य का निर्धारण होता है। आज कोई भी समाज परिवर्तन से अछुता नहीं है। यह अवश्यक है कि नगरीय व ग्रामीण समाज की तुलना में जनजातीय समाज में परिवर्तन की गति धीमी रही है। इसका एक बहुत बड़ा कारण जनजातीय समाजों की पृथकता है। लेकिन वर्तमान में जनजातीय समाज ग्रामीण व नगरीय समाज की ओर गतिशील है, इसका विशेषकर ग्रामीण व नगरीय समाज के लोंगो ने भी अपने आर्थिक लाभ के लिए इनके समाजों में प्रवेश कर रहा है। जनजातीय समाज सुदूर, बीहड़ जंगलों, पहाड़ों पर निवास करते आये हैं तथा उनकी अपनी एक संरचना परम्परा होती है। सुदूर स्थानों पर बसने के कारण सरकार द्वारा चलने वाले योजना इस तक दूर (देर) से पहुँचती हैं या नहीं पहुँच पा रहा है। नवीन संवैधानिक प्राविधानों ने आदिवासियों के जीवन निर्वहन की प्रकिया को प्रभावित किया हैं। जिन वनों के वे स्वामी हुआ करते थे, उन पर शासकीय आधिपत्य आ जाने से उनकी आर्थिक गतिविधियों में परिवर्तन परिलछित हुआ है। ऐसे स्थिति में बैगा आदिवासियों की आर्थिक संरचना का विश्लेषणात्मक अध्ययन समीचीन था ।

अध्ययन का उददेश्य :- (1) बैगा जनजातीय के विशेष संदर्भ में संचालित सरकारी योजनाओं का अध्ययन ।

(2) बैगा जनजातीय में संचालित सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता, स्वीकारिता एवं उपयोगिता का अध्ययन करना ।

(3) बैगा जनजातीय की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना ।

(4) बैगा परिवारों की आय व व्यय के स्वरूप एवं स्त्रोत का अध्ययन करना ।

शोध प्रविधि :- इस शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोंनो स्त्रोतों का उपयोग किया गया है । गुणात्मक एवं गणनात्मक दोंनो प्रविधि के अपने-अपने गुण व दोष होते है इसलिए इस शोध में त्रिभुजीकरण का सहारा लिया गया है। त्रिभुजीकरण का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योंकि शोध क्षेत्र में विभिन्न पद्धतियो का सम्मिश्रण करके शोधकर्ता द्वारा आकड़ों का संकलन किया जाता है जैसे-व्यक्तिगत साक्षात्कार के साथ-साथ समूह साक्षात्कार, साक्षात्कार अनुसूची के साथ अवलोकन तथा वैयक्तिक अध्ययन का प्रयोग किया जाता है जिससे आकड़े सरलता से एकत्रित किया जा सके। निर्दशन के आकार को चयनित करने के लिए सरल दैव निर्दशन पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस प्रतिदर्श इकादयों का चयन अनेक विधियों से होता है। इस शोध में लाटरी पद्धति द्वारा चुनाव किया गया है। अध्ययन के लिए मैंने कुल दो ग्राम पंचायत पंडरिया और बोदा47 में से तीन गाँव मोतिनपुर, करमंदा, गर्रा में निवासरत 100 बैगा सूचनादाताओं/परिवार (महिला-197, पुरुष-223) का चुनाव किया क्योंकि यहाँ पर बैगा जनजातीय परिवार की संख्या अधिक थी।

निष्कर्ष:- प्रस्तुत अध्ययन में पाया गया कि इनकी शैक्षणिक स्थिति 52.86% हैं, जिनमे प्राथमिक स्तर की शैक्षणिक स्थिति 35.47% हैं तथा इनकी आय का श्रोत कृषि एवं मजदूरी हैं जिनमें 59.07% लोग (सूचनादाता व परिवार) संलग्न हैं। तथा इनके प्रति व्यक्ति वार्षिक आय 14790 रूपये मात्र प्राप्त हुए। अध्ययनित बैगा नृजाति समुदाय में 69% सूचनादाता बैगा आवास योजना लाभार्थी के रूप में पाए गए हैं। 67% अध्ययनित समूह कृषि भूमि व पट्टा वितरण लाभ वर्तमान समय में ले रहे हैं जबकि चयनित सभी सूचनादाता व उनके परिवार द्वारा मच्छरदानी वितरण योजना का लाभ तथा जानकारी रखते हुए पाए गए हैं तथा 44% बैगा डीजल पम्पसेट वितरण योजना का लाभ वर्तमान समय में लेते हुए पाए गए। 67% स्प्रिंकलर सेट वितरण योजना, 49% साईकल मरम्मत प्रशिक्षण, 59% खाद्य व बीज वितरण योजना, 91% रोजगार गारंटी योजना, 5% विधवा पेंशन, 9% वृध्दा पेंशन, 75% शौचालय निर्माण योजना, 73.07% नि:शुल्क गणवेश वितरण, 24% पोषण आहार व टीकाकरण, 13% स्वास्थ्य बीमा (मुख्यमंत्री व प्रधानमंत्री) योजना, 6% नि:शुल्क सरस्वती साईकल वितरण योजना, 19% मातृ सुरक्षा के बारे में जानकारी रखते है 65 प्रतिशत इस योजना से संतुष्ट है तथा महिलायों की स्थिति को बेहतर प्राप्त हुए उसी प्रकार 3% संस्थागत प्रसव कार्यक्रम में भी देखने को मिले. चरण पादुका व अन्त्योदय राशन योजना, पल्स पोलियो का चयनित सभी नृजातीय समूह (सूचनादाता व परिवार) लगभग पूर्ण रूप से वर्तमान समय में लाभ ले रहें हैं जबकि विकासीय योजनाओं के सन्दर्भ में चयनित कुल सूचानादाताओं में 27% राजमिस्त्री प्रशिक्षण योजना के सन्दर्भ में जानकारी रखते हुए पाए गए वही 17% नि:शुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण योजना, 7% ए.एन.एम. प्रशिक्षण, 19% बॉस शिल्प प्रशिक्षण, 37% ईट व खपरा निर्माण प्रशिक्षण, 32% बाड़ी विकास कार्यक्रम योजना, 36% चारा अंजोरा कार्यक्रम योजना, 6% नि:शुल्क पी.ई.टी./पी.एम.टी. कोचिंग योजना, 13% राज्य छात्रवृति प्री मैट्रिक व पोस्ट. मैट्रिकोत्तर, 29% पोषण आहार व टीकाकरण, 19% ट्यूबेल खनन योजना, 37% कृषि व व्यापार हेतु शून्य ब्याज पर लोन योजना, 69% स्वरोजगार नि:शुल्क प्रशिक्षण योजना, 36% बैकयार्ड पोल्ट्री फॉर्म निर्माण योजना की जानकारी चयनित बैगा समूह रखते हुए वर्तमान समय में पाए गए।

इन योजनाओं में से अधिकतम योजनाओं की जानकारी ग्राम में निवासरत बैगा परिवारों को है ही नही एवं जिन्हें इन योजनाओं की जानकारी है वे इन योजनाओं से संतुष्ट प्रतीत नही हुए। प्रस्तुत शोध में इन योजनाओं के प्रति लोगों की असंतुष्टता के कारणों को जानने का प्रयास किया तो यह ज्ञात हुआ कि जो योजनाएँ इन जनजातियों के आर्थिक विकास के उद्देश्य से बनाई गई है उन योजनाओं का निश्चित लाभ इन जनजातियों को नही मिल रहा है। विभिन्न योजनाओं हेतु जो राशियाँ ग्राम विकास हेतु आती है उनका उपयोग निश्चित कार्य में नही किया जा रहा है। अध्यनित ग्रामों के अवलोकन द्वारा विकासीय योजनाओं की स्थिति को जब जानने का प्रयत्न किया तो मुझे उनमें अनेक कमियाँ दिखाई दी जैसे-ग्राम में सड़क निर्माण संबंधी किन्तु गाँव में सड़कें अभी भी कुछ गाँवों में आवागमन के लिए कच्ची सड़कें है इससे ग्रामवासियों को सबसे अधिक असुविधा बारिश के दिनों में होती है। इसी प्रकार आवासीय योजना हेतु आवेदन करने के पश्चात् बैगा आवास योजना का लाभ सभी बैगा परिवारों को उसका लाभ सही समय पर नही मिल प रहा है। इन गाँवों में दूसरी सबसे बड़ी समस्या शौचालय है इन गाँवों लगभग सभी घरों पर शौचालय की सुविधा है लेकिन इसका उपयोग नही करते ये खुले जंगलों में जाते है। ग्रामवासियों से यह ज्ञात हुआ कि 5-10 वर्ष पूर्व से ही गाँव में निर्मल ग्राम योजना के तहत् शौचालय निर्माण किया जा रहा है किन्तु अभी भी कुछ घरों में शौचालय नही बन पाये है।

बैगा जनजातियो के सामाजिक विकास हेतु भी अनेक योजनाएँ जैसे- स्वास्थ्य विकास, शैक्षणिक विकास, महिला एवं बाल विकास संबंधी अनेक योजनाएँ लागू की गई है जिससे इन जनजातियों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास हो सके। इन योजनाओं में से महिला एवं बाल विकास योजनाएँ पूरी तरह सफल सिद्ध हुई है।

संदर्भ-सूची:-

(1) http://cgtrti.gov.in/PVTG.html,26/03/2022.

(2) Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. (2011). Table A-11 Appendix: District wise scheduled tribe population (Appendix), Chhattisgarh - 2011. Census India NADA.

(3)Mohanty, P. K. (2002). Development of primitive tribal groups in India. Kalpaz Publications.

(4) उपाध्याय, विजयशंकर एवं गया पाण्डेय. (2002). जनजातीय विकास. भोपाल: मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी.

(5)वैद्य, नरेश कुमार. (2003). जनजातीय विकास मिथक एवं यथार्थ. जयपुर एवं नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन.

(6) चौरसिया, विजय. (2009). प्रकृति पुत्र बैगा. भोपाल: मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी.

(7) Elvin, Verrier. (1986). The Baiga. Delhi: Gian Publishing House, shakti nagar delhi.

(8)Ginsberg, M. (1932). Social Development In Sociology (pp. 42–45). London: Oxford University Press.

(9)MacIver, R. M., & Page, C. H. (1949). Society: An introductory analysis (pp. 521–525). London: Macmillan & Co. Ltd.

(10)World Bank. (1975). Rural development: Sector policy paper. World Bank Group. Page No. 3.

(11)Samal, A., & Bhargava, B. S. (1999). Panchayati Raj under siege: An analysis of Orissa's experiment with rural local government (pp. 137–158). New Delhi: Kanishka Publishers.